वृत्तपत्राचे नांव :- हिन्दी मिलाप
वृत्तपत्र प्रकाशन ठिकाण :- हैदराबाद
वृत्तपत्र पान नं.:- 7
दिनांक :- 10-03-2008
कटिंग नंबर: .....

ज्ञानी होने की पहचान

– महर्षि महेश योगी

हमारी भारतीय अर्थात् वैदिक विद्या प्रणाली में असली ज्ञानी होने का अर्थ है - चेतना की जागृति। चेतना कैसे जागृत होती है? जब उसमें ईश्वर रत्व अर्थात् ब्रह्माण्ड को चलाने वाली परमशक्ति का अवतरण हो जाता है। वह परमशक्ति, जिसमें प्रकृति के सारे नियम एक साथ समाहित हैं और जिनसे सारी सृष्टि का संचालन हो रहा है। कहने का तात्पर्य यह है कि हमारी मानवीय चेतना में प्राकृतिक नियमों का जागरण, चेतना में ब्राह्मी शक्ति की जागृति ही हमें वास्तव में ज्ञानी बनाती है। तब हमारा आचरण उन प्राकृतिक नियमानुसारी हो जाता है, जो विकासशील है, जीवनपोषक है, जिनमें अनेकता में एकता लाने की अद्भुत क्षमता है।

आत्मचेतना में प्राकृतिक नियमों की इस परम शक्ति के जागरण से ही हम सर्वज्ञ और सर्वसमर्थ बनते हैं। भारत की हमारी वेद-विद्या और वेद-विज्ञान के प्रयोग व्यष्टि और समष्टि की चेतना में इन्हीं प्राकृतिक नियमों को जगाते हैं, जिनसे हर क्षेत्र में सुचारुता बनी रहती है।

भौतिक विज्ञान में यूनीफाइड फील्ड की झलक पाने और वेद-विद्या से इसके तुलनात्मक अध्ययन के बाद वैज्ञानिक बिरादरी को समझ आ गया है कि किसी भी जनसंख्या का एक प्रतिशत वर्गमूल के बराबर लोगों द्वारा भावातीत ध्यान और भावातीत ध्यान सिद्धि कार्यक्रम के नियमित अभ्यास से समस्त जनसंख्या में सतोगुणी प्रभाव की जागृति होती है। विध्वंसात्मक, नकारात्मक वृत्तियाँ लुप्त होती हैं और सकारात्मक, सृजनात्मक, रचनात्मक वृत्तिया बढ़ती हैं। युद्धक स्थितियाँ पैदा ही नहीं होतीं। सुख, शांति और समृद्धि का वातावरण बनता है। वैज्ञानिकों ने इसे आधुनिक विज्ञान की शोधों पर परखने के बाद वेद-विज्ञान विद्या की तकनीकों और प्रयोगों की सैद्धांतिक और प्रायोगिक तौर पर पुष्टि करने के बाद इसे महर्षि प्रभाव की संज्ञा दी। जो लोग इस वैज्ञानिक तथ्य से रूबरू हुए उन्हें समझआया कि यदि प्रत्येक राष्ट्र अपनी जनसंख्या के अनुसार अपने-अपने देश में यौगिक साधकों का समूह स्थापित कर ले तो प्रत्येक राष्ट्र में अजेयता आती है। वह भी बिना शांति वार्ताओं के, बिना सम्मेलनों के, बिना भारी-भरकम हथियारों पर रक्षा खर्चे के।

इसीलिए भारत के ब्रह्मस्थान (भौगोलिक केन्द्र) में विश्वशांति राष्ट्र की वैश्विक राजधानी की स्थापना की, गई है और विश्वभर के तमाम देशों में विश्वशांति राष्ट्र की राजधानी स्थापित की जा रही हैं। इन शांति राष्ट्रों का प्रशासकीय मण्डल अपने-अपने देश में वैदिक प्रशासन से प्रत्येक क्षेत्र में सुख, शांति और समृद्धि की स्थापना करने में अपनी द्वितीय भूमिका निभा रहे हैं।